Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 844–855

DEPICTION OF SYMBOLS IN THE LORD VISHNU'S LOTUS FEET

भगवान् विष्णु के चरण कमलों में अभिव्यक्त प्रतीक

Aakansha Kumari [1]

[1] Ph.D. (Research Scholar), Department of Drawing and Painting, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand), India

ABSTRACT

English: Lord Vishnu consider the one of important divine being among the Trimurti who is responsible to regulate, nourish and nurture the universe continuously by the sounds of Yagya. The Lord Vishu appears in many glorified forms in various ancient texts that shows Lord Vishnu is equivalent to various elements which nurture the universe. Apart from discussion the glory of foot prints of Lord Vishnu also mention in form of Symbols theses foot prints also worship by the Goddess Laxmi with devotion, faith and dedication. According to these believes following are the symbols of right and left foot of lord Vishnu.

S. No.	Lotus Feet of Lord Vishnu	Depiction of Symbols
1	Right Foot	Joh (Barley), Chakra, Kamal, Urdhav Rekha (Vertical Line), Ankush (Goad), Dhwaj, Chatra, Vajra, Swastika, Anta-Kona, Jambu- Phala.
2	Left Foot	Shankha, Aakash, Dhanusha, Gaopad(Cow'sFoot), Kalasha, Tri-kona (Triangle), Ardha-Chandra, Matsya(Fish).

Through this research paper, it is tried to describe the above mention symbols which reveals in various forms in our world.

Hindi: त्रिमूर्ति स्वरूपों में से एक भगवान् विष्णु जिन्हें सम्पूर्ण सृष्टि में यज्ञ के ध्वनित स्वरुप में माना जाता है जिसके फलस्वरूप ही सर्वत्र विश्व का पालन एवं संचालन सतत् रूप में चलायमान होता है। इन्हीं भगवान् विष्णु के सौन्दर्यात्मक स्वरूपों की गणना का वर्णन विविध ग्रंथों में दृश्यमान होता है जिसके फलस्वरूप यह देखा जा सकता है कि इन्हें सृष्टि को सुचारू रूप से संचालित करने वाले विविध तत्वों के समतुल्य देखा जाता है। इसके अतिरिक्त इन्हीं विवेचनाओं में भगवान् विष्णु के चरणों के महिमा का वर्णन करते हुए उसमें अंकित प्रतीकों को भी व्यक्त किया गया है जिनकी पूजा-अर्चना देवी लक्ष्मी के माध्यम से भक्ति-पूर्वक एवं निष्ठावान रूप में की जाती रही है। इसके अनुरूप भगवान् विष्णु के दायें एवं बाएं चरण-कमलों में विविध प्रतीकों के स्वरूपों को देखा जा सकता है, यथा-

क्रम सं.	भगवान् विष्णु के चरण कमल	अंकित प्रतीक
1.	दायाँ चरण	जौ, चक्र, कमल, उध्व-रेखा, अंकुश, ध्वज, छत्र, वज्र, स्वास्तिक, अन्तःकोण, जम्बूफल
2.	बायाँ चरण	शंख, आकाश, धनुष, गौपद (गाय का खुरद्ध), कलश, त्रिकोण, अर्द्धचक्र मत्स्य

उक्त वर्णित प्रतीक संसार में विद्यमान विविध स्वरूपों को प्रस्तुत करते हैं जिसका वर्णन इस शोध पत्र में करने का प्रयास किया गया है।

Keywords: Lord Vishnu, Symbols, Lotus Foot, Yagya, Purana, भगवान् विष्णु, प्रतीक, चरण-कमल, यज्ञ, पुराण

Corresponding Author
Aakansha Kumari,
km.aakansha@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.1462

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

भगवान् विष्णु, जिन्हें संसार में त्रिमूर्ति स्वरूपों में से एक माना जाता है जो सृष्टि को स्थिर रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं द्य वेदों में वर्णित विविध देवी-देवताओं के स्वरूपों में भगवान् विष्णु के स्वरुप के विषय में अत्यंत सूक्ष्म एवं न्यूनतम ज्ञान प्राप्त होता हैं। भगवान् विष्णु के स्वरुप को हम विस्तृत रूप में व्याख्या ग्रंथों के साथ-साथ ब्रह्माण ग्रंथों में प्रथक-प्रथक प्रकरणों के साथ-साथ विविध प्रसंगों में भी देखते है जिनमें इनके विविध अर्थ एवं अभिप्रायों को वर्णित किया गया है।

जैसा कि हम सभी यह जानते है कि प्रारंभिक कालों में मानव अपने जीवन एवं समाज के सकारात्मक एवं सतत् संचालन हेतु यज्ञ किया करते थे जिससे वह अपने ईष्ट का आवाह्न कर अपने जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रार्थनारत रहते थे। इसी यज्ञ के विषय में ब्रह्माण ग्रंथों में कहा गया है कि भगवान् विष्णु का स्वरुप यज्ञ के ध्वनित रूप में इंगित है। इस तथ्य में विविध विद्वानों ने अपने–अपने मतों को प्रस्तुत किया है जिसके निष्कर्ष स्वरुप यह माना जा सकता है कि सृष्टि की उत्पत्ति मूलतः दो अणुओं अथवा दो तत्वों के संयोग से होती है। इन्हीं दो अणुओं अथवा तत्वों के संयोजन एवं संधि को विष्णु के नाम स्वरुप वर्णित किया गया है। यदि उक्त तथ्य को विश्लेषण स्वरुप दृष्टिपात किया जाए तो परिणामस्वरुप यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार "यज्ञ दो अणुओं अथवा तत्वों के संयोजन से सृजित होता है, यथा- यज्ञ = यजक = यजुः सङ्गति कारक से होती है।" (Vedalangkaar, 1964) उसी के माध्यम से भगवान विष्णु का अवतरण दो स्वरूपों के संयोजन से सृजित हुआ है।

शतपथ ब्राह्मण में भगवान् विष्णु के सम्बन्ध में यह कहा गया है कि "विष्णु ही यज्ञ है। यज्ञ प्रथम पाद से पृथ्वी, द्वितीय पाद से अंतरिक्ष तथा तृतीय पाद से आकाश का अतिक्रमण कर लेता है अथवा प्रथम पाद से पृथ्वी से अंतरिक्ष में जाकर द्वितीय पाद से आकाश में चला जाता है तथा उत्तम तृतीय पाद से सम्पूर्ण सृष्टि को बाँध लेता है।" (Swarswati S., 1873, p. 12)

उक्त तथ्य को यदि और स्पष्ट किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि ब्रह्मा के माध्यम से जब सृष्टि का सृजन किया जाता है तब भगवान् विष्णु इस त्रैगुण्यमयी सृष्टि के सत्व गुण के आश्रय से सृष्टि यज्ञ को स्थिर रखते है एवं इन्हीं यज्ञ के स्वरूपों को सतत् रूपों से संचालित रखना ही विष्णु के प्रमुख कार्यों में से एक माना जाता है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि का पालन निरंतर चलायमान रूप से होता रहता है। अतः इसी आधार पर भगवान् विष्णु को "यज्ञ" माना गया है।

"यस्माद्विष्टमिंद विश्वं तस्य शक्त्या महात्मनः।

तस्यात्म प्रोच्यते विष्णुविर्शधीतोः प्रवेशनात् ।।" (Acharya R. S., Vishnu Purana, 1999, p. 3/1/45)

अर्थात् सम्पूर्ण विश्व उन परमात्माओं की ही शक्तियों से व्याप्त है जिनके माध्यम से सृष्टि का संचालन होता हैए अतः वह संचालनकर्ता विष्णु कहलाते है क्योंकि 'विश्' धातु का अर्थ ष्प्रवेश करनाष् है।

इन्हीं भगवान् विष्णु के स्वरूप की विवेचना विविध ग्रंथो में वर्णित है जिसमें श्री विष्णु स्तुति में भगवान् विष्णु के सौन्दर्यात्मक गुणों के साथ-साथ उनके महिमामंडन के स्वरुपों को भी अभिव्यक्त किया गया है।

"शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिध्यानगम्यम्।

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्।" (Shree Vishnu Sahastranaamstrotam)

अर्थात् शान्ति के आकारगत भाव से ओतप्रोत, भुजंगध्नाग शय्या पर विश्राम करने वाले एवं जिनकी नाभि से पदम् के उद्भवए स्वरुप से समस्त देवों के रूप को अभिव्यक्त किया गया है जो विश्व के संचालन का आधार स्वरुप हैं। इसका आकार गगन के सादृश्य विस्तृत एवं विशाल हैं जिन्हें वर्ण को मेघ के समान एवं शुभता से परिपूर्ण माना गया हैं यह माता लक्ष्मी के पति परमेश्वर हैं द्य इनके चक्षु कमल के समान एवं योगियों के तुल्य ध्यान अवस्था में विराजमान हैं ऐसे ईश्वर स्वरुपए देवों के देव को प्रणाम है जो मानव जीवन में आने वाले भय का हरण करने वाले हैं एवं समस्त लोकों के नाथ हैं का हम वंदन करते हैं।

लोक-जीवन में भगवान् विष्णु के स्वरुप से आकर्षित एवं मोहित होने के साथ-साथ लोक-जन में उनके चरण-कमलों की आराधना एवं पूजन-पाठन किया जाता है जिनके स्वरुपों, महत्त्वों, प्रतीकों इत्यादि के विषय में विविध ग्रंथों में वर्णन किया गया है-

"नेयं शोभिष्यते तत्र यथेदानीं गदाधर।

त्वत्पदैरङ्किता भाति स्वलक्षणविलक्षितैः"।।39।। (Devi, Shree Madbhagwatmahapuranam, 1983, p. 422)

अर्थात् जब श्री कृष्ण पाण्डवों के साथ उनकी धरती हस्तिनापुर में निवास कर रहे थे तब श्री कृष्ण के पावन.चरणों के रज का स्वरुप जिसमें विविध एवं बहुमूल्य प्रतीकों के स्वरुपों अंकित हैं जिन्हें हस्तिनापुर की धरती पर चिह्नित देखा गया हैं जिनकी ओर माता कुंती ने भी संकेत किया था। इन प्रतीकों के स्वरुप से धरती स्वयं कोए वहाँ निवास करने वाले लोकजन को आशीर्वाद युक्त एवं सौन्दर्य अभिभूत करती है।

"ब्रह्मादयो बहुतिथं यदपाङ्गमोक्ष-

कामास्तपः समचरन् भगवत्प्रपन्नाः।

सा श्रीः स्ववासमरविन्दवनं विहाय

यत्पादसौभगमलं भजतेऽनुरक्ता"।।32।। (Devi, Shri MadBhagwatam, 1983, p. 609)

इसके अतिरिक्त भगवान विष्णु के चरणों के प्रति श्रद्धा भाव को अर्पित करते स्वयं देवी लक्ष्मी को भी देखा जा सकता है -

"तस्याहमब्जकुलिशाङ्कुशकेतुकेतैः

श्रीमत्पदैर्भगवतः समलङ्कृताङ्गी।

त्रीनत्यरोच उपलभ्य ततो विभूतिं

लोकान् स मां व्यसृजदुत्स्मयतीं तदन्ते"।।33।। (Devi, Shri MadhBhagwatam, 1983, p. 611)

अर्थात् भगवान् विष्णु के चरणों के महिमा को वर्णित करते हुए उक्त श्लोक में कहा गया है कि देवी लक्ष्मी, जिनकी कृपा दृष्टि हेतु ब्रह्मा तुल्य देवता भी कामना करते है एवं उनकी कृपा हेतु भगवान् की ओर शरणागत होते हैं वहीं देवी अपने निज-निवास धाम कमल-वन को त्याग कर भगवान् के चरणों को कल्याण स्वरुप मानकर भक्ति-पूर्वक एवं निष्ठावान हो निःसंकोच भाव से आकृष्ट हो उनके कमल चरणों को पूजती है जिनके चरण तलवों में सुसर्जित एवं अलंकृत कमल.पुष्प, वज्र, हाथी हाँकने का अंकुश, झंडा जैसे चिह्न स्वरूपों को देखा जा सकता है। परन्तु जब उन्हें इस बात का आभास हुआ कि यह अत्यंत गर्व का विषय है तब भगवान् ने उन्हें त्याग दिया।

उक्त वर्णित तथ्य को समाज में विविध चित्रों के माध्यम से वर्णित किया गया जिसमें से एक चित्र प्रस्तुत है-

चित्र 1 https://archive.org/details/clevelandart-2018.155-vishnu-on-ananta-the, fnukad 29-05.2024

स्थान: चंबा का राजपूत साम्राज्य, हिमाचल प्रदेश

माप: 17.8. 17.6 सेमी.

माध्यम: टेम्परा, लघुचित्र

भगवान् विष्णु के चरण-रज, पूजा-आराधना के पश्चात् उनके चरणों के दायें एवं बायें पगों में विद्यमान प्रतीकों को वर्णित करते हुए "श्रीरूपचिंतामणि" में कहा गया है कि -

"चंद्रार्द्ध कलसं त्रिकोणधनुषीखं गोष्पदं प्रोष्ठिकां,
शंख सव्यपदेऽथ दक्षिणपदे कोणष्टकं स्वस्तिकम्।
चक्रं छत्र-यवांकुशँ ध्वजपवी जम्बूध्व-रेखाम्बुजं,
विभ्राणं हरिमूनविंशति-महालक्ष्माचितौंघ्रि भजे।।" (Shri Roop Chintamani , p. 1)

अर्द्धचन्द्रमा, कलश, त्रिकोण, धनुष, आकाश, गौ-खुर, मछली एवं शंख। यह सभी आठ प्रतीक बाएं चरण में सुशोभित हैं। दक्षिण (दायाँ) चरण में अष्टकोण, स्वस्तिक, चक्र, छत्र, यंत्र, अंकुश, ध्वज, वज्र, जम्बूफल, उध्व-रेखा, कमल ये ग्यारह प्रतीक हैं द्य इस प्रकार दोनों चरण-कमलों में कुल मिलाकर उन्नीस प्रतीक श्रीमहालक्ष्मी अर्थात् श्री राधाजी द्वारा पूजित श्रीकृष्ण-चरणों में दृश्यमान है, जिनका मैं ध्यान करती हूँ।

उक्त श्लोक के आधार पर वर्णित प्रतीकों का वर्णन निम्नवत है-

क्रम सं.	दायाँ चरण कमल	बायाँ चरणकमल
1.	जौ	शंख
2.	चक्र	आकाश/अम्बर
3.	कमल	बिना प्रत्यंचा वाला धनुष
4.	उध्व-रेखा	गौ-पद/गाय के खुर
5.	अकुंश	कलश
6.	ध्वज	त्रिकोण
7.	छत्र	अर्द्ध-चन्द्र
8.	वज्र	मछली
9.	स्वास्तिक	-
10.	अन्त:कोण	-
11.	जामबुफल	-

इसके अतिरिक्त "श्रीगोविन्दलीलामृत" के एक श्लोक में कहा गया है कि श्री कृष्ण के चरणों में चक्र, अर्द्ध-चन्द्रमा, अष्टकोण, कलश, छत्र, त्रिकोण, आकाश, स्वस्तिक, वज्र, गौपद, कमल, ध्वज, पके जामुन फल, रेखा द्य इन उन्नीस सत्-लक्षणमय प्रतीकों द्वारा अंकित श्रीपुरोषोत्तममत्व के ज्ञापन करने वाले श्री कृष्ण चन्द्र के युगल-चरणों की सदा जय हो।

चक्राद्र्धेन्दु-यवाष्टकोण-कलशैशछत्र त्रिकोणाम्बरैश्चाप-स्वस्तिक-वज्र-गौष्पद-दरैमीर्नोदध्वरेखाड् कुशै:।

अम्भोज-ध्वज-पक्वजाम्बवफलै: सल्लक्षणैरडिक्तं, जीयाच्छी पुरूषोत्तमत्वगमकै श्रीकृष्णपादद्वयम्।।

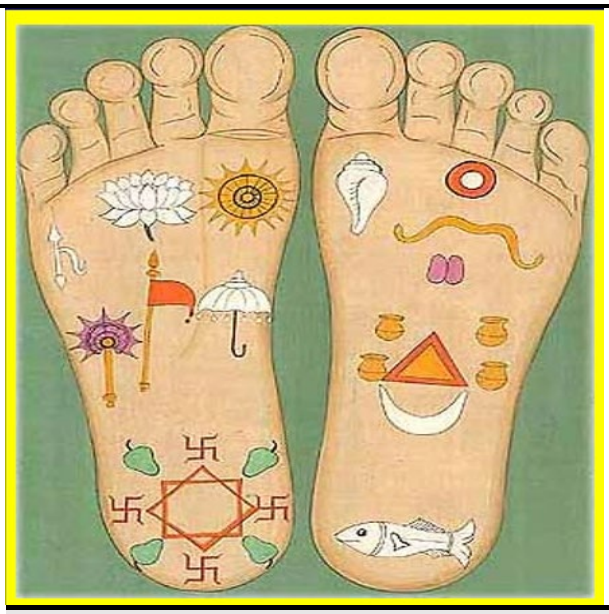

चित्र 2 Pin by Chitra on Devotional | Shiva lord wallpapers, Radha krishna art, Wiccan spell book (pinterest.com) Date: 29-05-2024

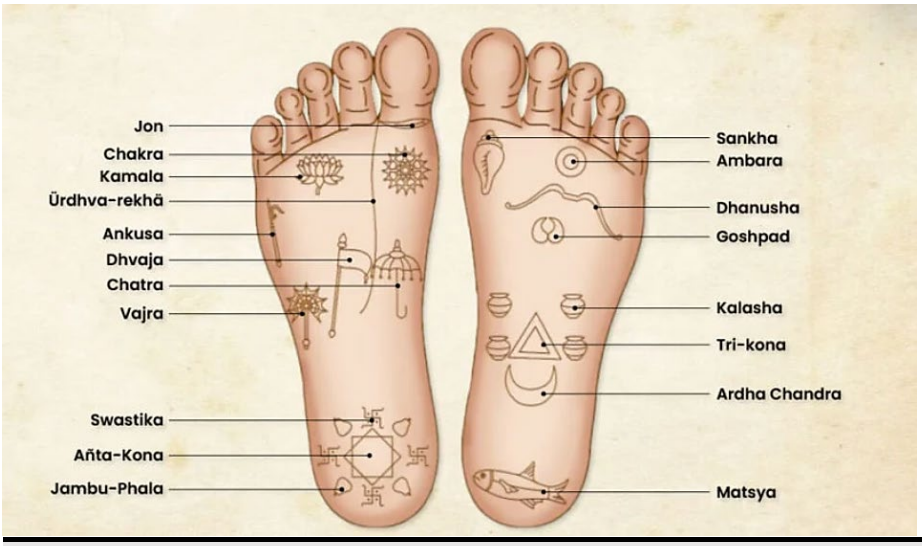

चित्र 3 What is the Significance of Krishna's Sacred Lotus Feet? — Theartarium | by Rahul Kushwaha | Medium, Date: 29-05-2024

उक्त वर्णित भगवान् विष्णु के चरण-कमलों में अंकित प्रतीकों के स्वरुपों, अर्थों एवं महत्वों का विवरण निम्नवत है -

भगवान् विष्णु के दायें चरण.कमल में विद्यमान प्रतीक :

1-जौ: इस प्रतीक का अंकन पृथ्वी पर प्राप्त प्रथम अनाज के रूप में किया जाता है जिसके माध्यम से मानव अपने जीवन के प्राथमिक आवश्यकताओं (अन्न)की पूर्ति करता है। यह मानवजाति का अनाज के रूप में पालन-पोषण कर उसे अपने जीवन के उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल बनाता है।

2-चक्र: भगवान विष्णु के अवतारों के अनुरूप चक्रों के स्वरुप को निम्न हाथों में धारण किया हुआ देखा जा सकता है। (Sharma , 2002, p. 71)

क्रम सं.	विष्णु अवतार	ऊपरी दायाँ हाथ	ऊपरी बायाँ हाथ	निचला दायाँ हाथ	निचला बायाँ हाथ
1.	केशव	-	-	चक्र	-
2.	नारायण	-	-	-	चक्र
3.	माधव	-	चक्र	-	-
4.	गोविन्द	चक्र	-	-	-
5.	विष्णु	-	-	-	चक्र
6.	मधुसूदन	चक्र	-	-	-
7.	त्रिविक्रम	-	-	चक्र	-
8.	वामन	-	चक्र	-	-
9.	श्रीधर	-	चक्र	-	-
10.	दृषीकेश	-	चक्र	-	-
11.	पदम्नाम	-	-	चक्र	-
12.	दामोदर	-	-	-	चक्र
13.	संकर्षण	-	-	-	चक्र
14.	वासुदेव	-	-	चक्र	-
15.	प्रदुम्न	चक्र	-	-	-
16.	अनिरूद्ध	चक्र	-	-	-
17.	पुरुषोत्तम	चक्र	-	-	-
18.	अधोक्षज		-	-	चक्र
19.	नृसिंह		-	-	-
20.	अच्युत		-	चक्र	-
21.	जनार्दन	-	चक्र	-	-
22.	उपेन्द्र	-	-	चक्र	-
23.	ळरि	-	चक्र	-	-
24.	कृष्ण	-	-	-	चक्र

ष्विष्णुपुराणष् में सुदर्शन चक्र की उत्पत्ति के विषय में वर्णन किया गया है कि ष्महर्षि विश्वकर्मा ने अपनी पुत्री का विवाह सूर्य के साथ किया परन्तु वह सूर्य के तेज को सहन न कर सकी एवं वह अपने स्थान पर दासी को नियुक्त करके जल में चली गयी। जब यह वृतान्त महर्षि विश्वकर्मा को ज्ञात हुआ तब उन्होंने सूर्य को अपना तेज कम करने के लिए प्रार्थना की। तदनुसार सूर्य को बाण पर चढ़ाकर उसके तेज का आठवाँ भाग पृथक कर दिया एवं इसी भाग से महर्षि विश्वकर्मा ने सुदर्शन चक्र की रचना की।

उक्त के अतिरिक्त ष्पद्मपुराणष् में यह कहा गया है कि महादेव के द्वारा देवों का तेज संग्रहीत करके सुदर्शनचक्र का सृजन किया गया एवं उसे भगवान् विष्णु को सौप दिया गया था। यह चक्र अग्नि की ज्वालाओं से युक्त, मन के समान तीव्रगामी और सब आयुधों का संहारक है ।

"अथ विष्णु मुखा देवाः स्वतेजांसि द्दुस्तथा।

तेना करोन्महादेवः ... चक्र सुदर्शनं नाम ज्वलितं ज्वाला मालातिभीषणम्।।" (Acharya R. S., 1977, p. 1/145)

उक्त के अतिरिक्त चक्र के विषय में अन्य विद्वानों के माध्यम से यह वर्णित किया गया है कि सुदर्शनचक्र देवताओं का आयुध था, जो सौर शक्ति से चलता था। यह अपने लक्ष्य को गिराकर पुनः

प्रयोक्ता के पास वापस आ जाता था। अग्नि पुराण में चक्र के सात कर्म वर्णित किये गए है, यथा- छेदन, भेदन, पातन, भ्रमण, शयन, विकर्तन और कर्तन। (Devvrat, 1999, p. 13)

3- कमल पुष्प/पदम्: पदम् मुख्य रूप से अगाध जलों के अन्तःकरण में विकसित एवं पल्लवित प्राण अथवा जीवन का प्रतीकात्मक स्वरुप है जो सूर्योदय की किरण के साथ अपनी पंखुड़ियों को सर्वत्र प्रकाशित करता है। ष्पदम् पुराणष् में कथित है कि विष्णु की नाभि से जो पदम् पहले उत्पन्न हुआ वह पृथ्वी रूप था। यह पद्म ही रसादेवी या पृथ्वी कहा जाता है।

तच्च पद्म पुराभूतं पृथ्वीरूपसमुत्तमम्।

यत्पद्म सा रसादेवी पृथ्वी परिवक्ष्येते।। (Acharya R. S., PdamPuran, 1977, p. 194)

अर्थात् भगवान विष्णु अपने नीचे के दायें हाथ में पदम् पुष्प को धारण किया हुआ है जो ईश्वर की शक्ति के स्त्रोत के रूप में अपनी अभिव्यक्ति रखता है जिससे ब्राहमाण्डिय चेतना का उद्भव होता है। यह आध्यात्मिक मुक्ति, दिव्यता, व्यक्ति के अन्तःकरण में जाग्रत आध्यात्मिक चेतना का प्रकटीकरण है। भगवान् विष्णु की नाभि रुपी कमल से ब्रह्मदेव का उद्भव माना जाता है जो सृष्टिकर्ता है। कमल को मन एवं प्राण शक्ति का भी प्रतीक माना जाता है। कमल की खुली पंखुड़ियों का स्वरुप मूलतः मानव जाति की सुप्त आध्यात्मिक चेतना का अभिव्यक्तिकरण है।

4-उध्र्व रेखा: यह रेखा प्रमुख रूप से मानव जीवन की दिशा एवं दशा को उध्र्वगमन के रूप व्यक्त कर उनके जीवन की उच्चता, महत्वाकाँक्षा, दृढता, गौरव, स्थिरता, शाश्वत्ता इत्यादि को वर्णित करता है। इसमें उनके जीवन की शारीरिक अवस्था से लेकर मानसिक अवस्था के साथ-साथ आध्यत्मिक स्वरुप का भी अभिव्यक्तिकरण होता है जो मानव जीवन को जन्म-मरण के चक्रों से विमुख कर उसे मोक्षतम स्थिति की ओर अग्रसर करने में विशेष महत्त्व रखता है।

5-अकुंश: यह प्रतीक पाप नाशक एवं एक आयुध के रूप में अपनी अभिव्यक्ति रखता है। वहीं दूसरी ओर इसे 'ज्ञान रूपिणम' (Ranjendrranjan, 1998) भी कहा जाता है अर्थात् ज्ञान शक्ति को अकुंश। यह ज्ञान मनुष्य को मानव शरीर एवं आत्मा में भेदबुद्धि का नाश करने वाली शक्ति के रूप में स्वयं को प्रदर्शित करता है साथ ही यह मानव की मर्यादाओं को तोड़ने वाले दुर्जनों के नियंत्रण के लिए प्रतिबद्ध होता है। इसके साथ ही यह मानव को रजोगुण से ऊपर उठाकर एक विशेष आनंद को अनुभव करने में मददगार सिद्ध होता है।

6-ध्वज: ध्वज वैदिक संस्कृति के गर्भ यग्य कुण्ड से उत्पन्न देवी आयुध है। कोई भी आयुध शत्रु पर विजय दिलाने हेतु होता है। ध्वज भी विजय को प्रदान करता है। संस्कृत वाड्मय में ध्वज के विविध नाम वर्णित है जिसमें ध्वजः, पताका, वैजयन्ती, केतुः, केतनम्, शिखा, इंद्रध्वजः, शक्रध्वजः, शक्रचिह्नम्, इंद्रकेतुः इत्यादि। इसके अतिरिक्त अमरकोष में ध्वज को पताका, वैजयन्ती एवं शिखा ध्वज के स्त्रीलिंग वाचक के रूप में कहा गया है।

"पताका वैजयंती स्यात् केतनं ध्वज मस्त्रियाम।"(Upadhyay , Amarkosh, 2016 , p. 8.99) ध्वज के अंगों के विषय में ष्समरांगण सूत्रधारष् में 11 वी. शताब्दी में महाराज भोजदेव द्वारा ध्वज के अंगों के विविध स्वरूपों ध्वजगृह, ध्वजपीठ, ध्वजभ्रामणयंत्र, मल्ल, लटक, सूची, अष्टरज्जु एवं मृगालियाँ प्रभृति के रूप में व्यक्त किया है द्य

अंगों के अतिरिक्त ध्वज के प्रकार (Upadhyay, Dhwaj Ka Itihash, 2016) निम्नवत है -

1-देवध्वज/धर्म ध्वज/सम्प्रदाय ध्वज: यह आरंभिक काल से विद्यमान है एवं यह देवताओं के द्वारा उत्पादित है।

2-शक्र ध्वज: यह ध्वज देवों के राजा इंद्र हेतु युद्ध में परिज्ञान प्रतीक के कारण के रूप में माना जाता है।

3-मनुष्य ध्वज/राष्ट्रध्वज: यह ध्वज मनुष्यों के द्वारा अपने राजा एवं राष्ट्र के लिए प्रयोग किया जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि ध्वज किसी भी देव, राष्ट्र एवं कुल हेतु समादरणीय होता है इसके विपरीत बिना ध्वज के कोई भी राष्ट्र श्रीहीन एवं अस्तित्वविहीन माना जाता है।

7-छत्र: छत्र संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ छतरी, राजाओं या राज-सिंहासन के ऊपर लगाया जाने वाला छाता है। इसके साथ-साथ छत्र को राज एवं सत्ता के साथ-साथ अधिकार का भी प्रतीकात्मक रूप माना गया है। प्राचीन काल में राजाओं के द्वारा जब राजपाठ को स्वीकार किया जाता था एवं उनका राज्याभिषेक किया जाता था तब उसके सिंहासन के ऊपर की ओर छत्र लगा होता था। इसी कारण राजा को छत्रपति भी कहा जाता था। इस दृष्टि में छत्र का अर्थ यह है कि राजा के छत्र-छाया में समस्त प्रजाओं का कल्याण निहित है।

छत्र के विषय में श्रीमद्भगवत् (Goyandka, 2010, p. 10.70.44) में भी वर्णित है कि -

"यस्यामलं दिवि यशः प्रथितं रसायां
भूमौ च ते भुवनमंगल दिग्वितानम्।
मन्दाकिनीति दिवि भोगवतीति चाथो
गङ्ेति चेह चरणाम्बु पुनाति विश्वम्"।।44।।

हे प्रभु ! आप समस्त मंगलकारी प्रतीकों की अभिव्यक्ति है । आपके अद्भुत नाम का प्रताप ब्रह्माण्ड के उच्च, मध्य एवं अधो लोक के साथ-साथ समस्त लोकों के भी ऊपर एक छत्र के समान विस्तृत रूप में प्रसारित हैं। आपके चरण-कमलों को प्रक्षालित कर प्राप्त हुए दिव्य जल से समस्त लोकों में मन्दाकिनी नदी के नाम, अधो लोक में भोगवती के नाम एवं इस लोक में गंगा के नाम से विश्वविख्यात है। यह दिव्य एवं पवित्र जल सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में प्रवाहित होता है एवं जिस भी स्थान में उसका प्रसार होता है उस स्थान को पवित्र कर देता है अर्थात् छत्र यानि बैकुंठ लोक जिसकी छत्र-छाया में समस्त मानव जाति एवं जगत को समाहित किये हुए है जिसके कारण समस्त लोक स्वयं को सुरक्षित एवं पूर्ण महसूस करते हैं।

उक्त तथ्यों के आधार पर यह वर्णित किया जा सकता है कि जब भगवान् विष्णु को क्षीर सागर में शयन करते हुए देखा गया तब उस दृश्य में सहस्त्र मुख वाले शेष नाग के स्वरुप का भी दर्शन हुआ जो एक छत्र की भाँति भगवान् विष्णु के स्वरुप को छाया देने के साथ-साथ उनके आभा-मण्डल भी प्रदर्शित कर रहा था ।

अधोलिखित समस्त तथ्यों के आधार पर यह वर्णित किया जा सकता है कि छत्र एक विश्वासात्मक प्रतीक है जो मानव को विविध प्रकार की बुराईयों से बचाता है एवं साथ ही समानता के साथ समस्त ब्रह्मांडिय संरचना को संरक्षित कर आध्यात्मिकता की ओर प्रसारित करता है।

8-वज्र: वज्र का अर्थ विधुत् होता है। (Acharya D. , 1999, पृ. 192) हस्त एवं पाँव में वज्र की उपस्थिति साहस, धैर्य तथा आत्मविश्वास का सूचक है। (Shree Mali, 2006, p. 83) इसके अतिरिक्त वज्र को अग्नि के स्वरुप में भी व्याख्यित किया गया है।

"अग्निहि रक्षसामपहत्ता।।" (Swarswati D. , 1873, p. 1.1.1.9)

इसके अतिरिक्त वज्र का वर्णन 'उत्तर.रामचरितमानस' में भी किया गया है-

वज्रादपि कठोराणि मृद्रनि कुसुमा दपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि का नु विज्ञातुमर्हंति।। (Poddar , p. 1.15)

जिस प्रकार श्री राम का हृदय वज्र से भी कठोरतम और पुष्प से भी कोमलतम है। उसी प्रकार स्त्री भी कोमलतम एवं कठोरतम है। अतः जो पुरुष इस नियन को भंग करता है उसको भी यह नष्ट कर देता है।

वज्र को मुख्य रूप से चार स्वरूपों में देखा जा सकता है (Narayan Datt, 1998)-

1-उध्र्व वज्र: यह वज्र व्यक्ति विशेष की प्रबलता, साहस एवं निर्भीक स्वरुप को अभिव्यक्त करता है।

2-अधोवज्र: इस प्रकार का वज्र शत्रुओं का परास्त करने की कला का सूचक माना जाता है।

3-वाय वज्र: यह वज्र व्यक्ति के प्रबल प्रतिनिधित्व एवं सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि का प्रमाण होता है।

9-स्वस्तिक: स्वस्ति एवं कल्याण की भावना से ओतप्रोत यह प्रतीक भारत के कण-कण में अपनी प्रतीकात्मक अभिव्यक्त को सदैव प्रदर्शित, विस्तारित एवं प्रसारित करता रहा है। अमर कोष के अनुरूप स्वस्तिक का अर्थ आशीर्वाद, मंगल, पुण्य क्षेम इत्यादि है। इसके अतिरिक्त "स्वस्तिक को चतुर्दल कमल

का घोतक भी माना जाता है तथा कतिपय लोक विष्णु के वक्ष स्थल पर विराजित कौस्तुभमणि को स्वस्तिककार मानते है।" (Verma, Prateekshashtra, 1964) स्वस्तिक की चार भुजायें भगवान् विष्णु की चतुर्भुजाओं से साम्य रखती है। इसके साथ ही स्वस्तिक का केंद्र बिंदु भगवान् विष्णु की नाभि कमल, यानी ब्रह्मा का उत्पत्ति स्थल भी माना जाता है। अतः स्वस्तिक एक सृजनात्मक एवं प्रणय स्वरूप है जो मानव समाज के मंगलम जीवन के संचालय को सकारत्मक रूप से पूर्ण करता है एवं इसके अतिरिक्त यह विध्नहारक भी है जो समाज में विद्यमान नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करता है।

10-अन्तःकोण: मनुष्य के जीवन की रेखा समबाहु त्रिभुज की भुजाओं के समान 60-60 अंश के तीनों अन्तःकोणों का सम्मिलित रूप होता है जिसका योग 180 अंश के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करता है। इस स्वरूप में मानव जीवन को सतत् रूप से संचालित करने के लिए त्रिभुज की भाँति तीनों मूल स्वरूप, यथा- ज्ञान, कर्म एवं भक्ति के स्तंभ का प्रतिनिधित्व करते है एवं यह त्रिभुज की रेखाओं के समान एक दूसरे के सहयोग से मानव जीवन को पूर्ण रूप प्रदान करती है, यथा-ज्ञान मानव की जीवन धारा को सत्य एवं असत्य का ज्ञान प्रदान करता है वहीं इसके माध्यम से किये जाने वाले सात्विक कर्म के माध्यम से मानव अपनी भक्ति भाव से आध्यत्मिक उन्नति कर स्वयं को इस मानव जीवन में सफल बनाता है।

11- जम्बूफल: यह संस्कृत का शब्द है जिसके अर्थ जामुन फल के रूप में माना जाता है। यह शीतलता को इंगित करने के साथ-साथ मानव जीवन में भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पौराणिक कथा के अनुरूप भगवान् विष्णु के अवतार में से एक प्रभु श्री राम को जामुन के फल का सेवन करते हुए देखा जा सकता है एवं इसी कारणवश मंदिर एवं पवित्र स्थान पर जम्बूफल का वृक्ष होना नितांत आवश्यक माना जाता है।

भगवान् विष्णु के बाएं चरण में अंकित प्रतीक:

1-शंख: शंख की उत्पत्ति जल से मानी जाती है जिससे समस्त संसार का उद्भव हुआ। शंख मंगल कार्यों के साथ-साथ संग्राम में विजय ध्वनि का भी प्रतीक है। वैज्ञानिक स्वरुप में शंख की ध्वनि जिसे आध्यात्मिक स्वरुप में शंखनाद भी कहा जाता है की ऐसी विरल ध्वनि प्रस्फुटित होती है जो एक अज्ञात शक्ति के रूप में मात्र अनुभव की जा सकती है एवं जो प्राणों को प्रकम्पित, ह्रदयतंत्री के तारों को झंकृत करने के साथ-साथ आनंद, उत्साह एवं आह्लाद का भाव उत्पन्न करती है। शंख शौर्य, जाग्रति एवं मंगल के प्रतीकात्मक स्वरुप के रूप में भी अपनी भूमिका प्रदर्शित करता है।

इस शंख के माध्यम से संक्रामक रोगों को नष्ट कर, नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया जाता है।

तंत्रशास्त्र के अनुसार: शंखनाद की ध्वनि-तंरगों से कुण्डलिनी व रूद्र चक्रों पर प्रभाव पड़ता है और मानव शरीर के अन्तर में सुषुप्त-शक्ति जाग्रत होती है।

शंख के यदि कलात्मक स्वरुप का विश्लेषण किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि शंख में विविध रेखालय अंकित होते है जो एक बिंदु से प्रारंभ होकर निरंतर गतिशील रहते है। यह बिंदु सृष्टि के एक ही स्त्रोत से सम्पूर्ण संसार के उद्भव का प्रतीक व इससे उत्पन्न ध्वनि नाद ब्रह्म का प्रतीक कही जाती है।

इसके अतिरिक्त शंख भगवान् विष्णु जिन्हें सृष्टि का पालनकर्ता कहा जाता है के हाथ में शंख को सुशोभित देखा जा सकता है जिसे मंदिरों एवं घरों में पूजा.अर्चना के समय नियमित रूप से ध्वनित कर मंगल ध्वनि को प्रवाहित करते है। कुछ विद्वानों के द्वारा यह भी कहा गया है कि अमृत-मंथन के समय क्षीर सागर से उत्पन्न हुयें चैदह रत्नों में से एक शंख भी है।

शंख को मुख्यतः दो रूपों में देखा जा सकता है -

1- वामावर्त शंख

2- दक्षिणावर्त शंख

उक्त के अतिरिक्त एक अन्य शंख भी विद्यमान है जिसके विषय में "श्री मद्भागवत" में वर्णित किया गया है कि 'प्रहलाद के भ्राता साह्लाद की पत्नी ऋतु के गर्भ से पाञ्चजन्य नामक दैत्य ने जन्म लिया। जिसका वध हो जाने के उपरान्त उसी की अस्थियों से पाञ्चजन्य शंख की उत्पत्ति हुई।' यह शंख दक्षिणावर्त है जो मूल्यवान होने के साथ-साथ सौभाग्य का भी प्रतीक माना जाता है। इसी प्रकार के शंख को भगवान् विष्णु के ऊपर वाले बाएँ हाथ में देखा जा सकता है जिससे वह संसार का उद्भव करने के साथ-साथ

संचालन भी करते है। 'पाञ्चजन्य शंख मूलतः पंचभूत तत्वों को अभिव्यक्त करता है जिसमें जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश आते है।' (Tripathi, 2003) महाभारत युद्ध के समय भी भगवान् विष्णु के अवतार श्री कृष्ण ने पाञ्चजन्य शंख को बजाकर ऊर्जा का संचार किया था। इसी प्रतीक को भगवान् विष्णु के चरण में देखा गया है।

2.अम्बर: "पदम् पुराण" में यह वर्णित है कि "मन से जो कुछ संकल्प.विकल्प होता है एवं चाक्षुरादि इन्द्रियों एवं बुद्धि से जिन-जिन विषयों को ग्रहण किया जाता है एवं 'बुद्धि के द्वारा जिन-जिन वस्तुओं का आवलन होता है वह देश एवं काल के रूप में आकाश वस्तु में विलीन हो सब भगवान् विष्णु के ही स्वरुप बन जाते है।" (Acharya R. S., Padam Puran, 1977, p. 2.115)

कुछ विद्वानों ने भगवान् विष्णु का वर्णन करते हुए यह भी कहा है कि अनन्त आकाश के रंग से ही भगवान विष्णु के श्याम वर्ण की व्याख्या हुई है।

"आकाश शरीरं ब्रह्म" (Taitiyopanishad, Shankar Bhashya , 1993 , p. 1.6.2)

इसके अतिरिक्त विष्णु को गगन सादृश्य मेघ वर्ण भी कहा गया है।

"नभः शिरस्ते देवेशं" (Acharya R. S., Skandpuran, 1971, p. 27)

उक्त के अतिरिक्त पौराणिक कथा के अनुरूप यह देखा जा सकता है कि जब वामन भगवान् ने अपना विराट रूप को धारण किया तब उन्होंने एक पग में सारी पृथ्वी, शरीर से सम्पूर्ण आकाश एवं बाहुओं से दिशाएं एवं दूसरे पग से स्वर्ग नाप लिया द्य अब तीसरा पग रखने के लिए कोई स्थान रिक्त नहीं था तब बलि ने अपना सिर छुका दिया एवं भगवान के पैर रखते ही बलि पाताल में पहुँच गए।

3-धनुष: ष्विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुरूप यह कहा गया है कि विष्णु के परम आयुध दिव्य धनुष शाडंग को महर्षि विश्वकर्मा ने सात वित्स्ति (साढ़े तीन हाथ) का बनाया है। (Acharya D. , 1999, p. 29)

शार्ङ्ग पुनर्धनुर्दिव्यं विष्णोः परममायुधम्।

वितस्तिसप्तमं मान निर्मित विश्वकर्मणा ॥44॥

"नीतिप्रकाशिकायां धनुर्भेदाः में कार्य के अनुरूप धनुष के भेदों का वर्णन किया गया है जिसमें बॉस से निर्मित एक ताल (चार हाथ) कम्बा इंद्रधनुष के समान झुकाववालाए वैष्णव धनुष कहलाता है।" (Acharya D. , 1999, पृ. 27)

शाङ्गिकं त्रिणतं प्रोक्तं वैणवं सर्वनामितम् । वैतस्तिकं धनुश्शस्त्रं वैणवं तन्द्रि हस्तकम् ॥ २१ ॥

4-गौ-पद ब्राह्मण ग्रंथो में गौ-पद का अर्थ अन्न, इडा, अदिति, सरस्वती, वैश्वदेवी, अन्तरिक्ष, पुरुष का रूप, लोक एवं प्राण इत्यादि अर्थों का बोधक है। (Shashtri, 2007) ष्विविध-विविध ग्रंथों में गौ के स्वरूपों को निम्न रूपों में वर्णित किया गया है (Acharya R. S., Yajurved sanhita, 2010, p. 10) -

"इडा हि गौरदितिहि गौः सरस्वति हि गौः" (शतपथ ब्राहमण-14.2.1.7)

"वैश्वदेवी हि गौः" (गौपद- 3.19)

"प्राणों हि गौः" (शतपथ ब्राहमण- 4.3.4.25)

निघंटुपद वाच्य वैदिक कोष का प्रथम पद गौ है। यहाँ गौ पद पृथ्वी के पर्याय नामों के रूप में वर्णित है। गौ-पद सूर्य के साथ ही सूर्य की सुषुम्न नामक रश्मि का भी परिचायक है। इसके अतिरिक्त ऐकपादिक कांडान्तर्गत गौ पद सूर्य रश्मि एवं अश्वरश्मि का भी बोधक है।

5-मंगल-घट: मंगल घट को अमृत.घट, कलश, घट, पूर्ण.कुम्भ इत्यादि नामों से जाना जाता है। इसका उद्भव समुद्र मंथन के समय हुआ था। यह सुख-समृद्धि, सौभाग्य, सफलता, आनंद एवं पूर्णता का द्योतक है। मंगल-घट त्रि.देवों ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश का प्रतीक माना जाता है। मंगल घट को शास्त्रों के अनुरूप तीन भागों में विभाजित किया जाता है, यथा- (Kaghwah, 2002)

1- मंगल-घट का मुख - ब्रह्मा

2- मंगल-घट के मध्य का भाग - भगवान् विष्णु

3- मंगल-घट की ग्रीवा - भगवान शिव

मंगल-घट को सृष्टि के अखण्ड स्वरुप एवं सत्व को धारण करने वाला बताया गया है। यह जल से पूर्ण होने के साथ-साथ पदम् एवं लक्ष्मी का उद्भव माना जाता है एवं यह आध्यात्मिक एवं भौतिक तत्वों के समन्वयात्मक स्वरुप से संबंधित है।

6- त्रिकोण: त्रिकोण मानव जीवनए शक्ति एवं परम शिव का प्रतीक है द्य इसके अतिरिक्त योनि मुद्रा भी त्रिकोणात्मक होती है। “योनि ही सृष्टि की जननी, माता एवं शक्ति है।“ (Verma, PrateekShashtra, 1964)

“त्रिकोणरूपिणी शक्तिबिं्रदुरूप: परः शिवः।

अविनाभावसंबंद्धस्तस्माद् बिंदुत्रिकोणयोः।।“ (Diwakar, 1987)

त्रिकोण के तीनों बिंदु रक्त, शुक्ल, मिश्र तथा मध्यस्थित महाबिंदु एवं चारों बिंदु मिलाकर कामकला के विग्रह को अभिव्यक्त करते हैं।

7-अर्द्धचन्द्र: “भगवत् गीता” के अनुसार चन्द्र एवं सूर्य भगवान विष्णु के नेत्र है अर्थात् सूर्य जो सम्पूर्ण सृष्टि को प्रकाशमय स्वरुप से ओत-प्रोत करता है वहीं चन्द्र रात्रि की आभा से सम्पूर्ण सृष्टि को शीतलता प्रदान करता है द्य इसके अतिरिक्त जिस प्रकार सूर्य एवं चन्द्र अपनी निरंतरता को सदैव बनाये रखते है उसी प्रकार मानव को अपने जीवन में किसी भी विपरीत परिस्थिति में निराशा नहीं होना चाहिए बल्कि सकारात्मक होकर आगे बढ़ना चाहिए।

“शशि सूर्य नेत्रम” (Bhgwatgeeta & Goyandka, 2010, p. 11.19)

8-मत्स्य: सृष्टि की रचना जल से प्रारंभ होती है जिसका प्रतीक मत्स्य है द्य यह मत्स्य अर्थात् मछली जिसे विश्व के प्रथम पूर्ण विकसित जीव के रूप में जाना जाता है। भगवान् विष्णु के दस अवतारों में प्रथम अवतार मत्स्य अवतार है। इस अवतार का आगमन निर्बलों की सुरक्षा हेतु देवी सत्ता के रूप हुआ था जिसके विषय में ष्श्री दशावतार स्त्रोतष् में कहा गया है कि-

प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेद,

विहित वहित्रचरित्रखेदम्।

केशव धृतमीन शरीर जय जगदीश हरे।।1।।

प्रलयकाल में जब संसार की प्रत्येक वस्तु समुद्र के जल में डूब रही थी तब वेदों को जल के ऊपर धारण करने के लिये श्री कृष्ण ने मत्स्य (मीन) का शरीर धारण किया। उन जगत के स्वामी श्री हरि की जय हो।

उक्त वर्णित भगवान् विष्णु के कमल.चरणों में अंकित प्रतीकों के अध्ययन करने पर निष्कर्ष स्वरुप यह कहा जा सकता है कि इन समस्त प्रतीकों की पूजा-आराधना प्राचीन काल से समकालीन काल तक भगवान् विष्णु की पूजा.आराधना के समकक्ष स्थान प्रदर्शित करती है जिससे मानव को कल्याणमय जीवन की प्राप्ति होती है। यह समस्त प्रतीक समाज की संस्कृति के साथ-साथ मानव् जीवन के प्रत्येक पहलूओं (जन्म से मृत्यु तक) में किसी न किसी रूप से सम्बन्ध रखते है जिनकी वह आराधना कर अपने जीवन के बहुमूल्य उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होते है। इसी कारण वैष्णव सम्प्रदाय में भगवान् विष्णु के कमल.चरणों की आराधना सर्वमान्य है जो समकालीन काल में भी दृश्यमान होती है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

Ms. “AAKANHSHA KUMARI” is a recipient of Indian Council of Social Science Research Full term Doctoral Fellowship. Her Article is largely an outcome of her doctoral work sponsored by ICSSR. However, the responsibility for the facts stated, opinion expressed & the conclusion drawn is entirely that of the author.

REFERENCES

Acharya , D. (1999). *Dhanurved .* Delhi-6: Vijay Kumar Govindram Hassanand.

Acharya , R. S. (1971). *Skandpuran.* Barelii : Sanskrati Sansthan .

Acharya , R. S. (1977). *PdamPuran* (Vol. 1). Barelii: Sanskrati Santhan.

Acharya , R. S. (2010). *Yajurved sanhita .* Mathura: Yug Nirmaan Yojna Vistaar Trust.

Acharya, R. S. (1999). *Vishnu Purana* (Vol. 1). Bareilly: Sanskrati Sansthan.

Bhgwatgeeta, & Goyandka, H. (2010). *Shri MadBhagwat Gita, Shankar Bhashy.* Gorakhpur: Geeta Press.

Devi, D. (1983). *Shree Madbhagwatmahapuranam* (Vol. 1). Allahabad: Dayalok Prakashan Sansthan.

Devvrat. (1999). *Dhanurved.* Delhi: Govindram Publication.

Diwakar, D. (1987). *Brigusanhita .* Bengaluru: Vigyan Sodh Kendra.

Goyandka, H. D. (2010). *ShriMadBhagwatam Shankar Bhashy.* Gorakhpur: GitaPress.

Kaghwah , T. (2002). *Vaishnav Dharmi Murtikala mai Prateek Parampraa : aek adhyyan .* Jabalpur : Vaidik Vishvvidhyalaya .

NarayanDatt, S. M. (1998). *Hastrekha Rahashya.* Delhi: Mayur Paper Back.

Poddar , H. P. (n.d.). *Shri RamCharitraManas.* Gorakhpur: GitaPress.

Ranjendrranjan, C. (1998). *Shree Vishya Kalplata.* Delhi: Moti Lal Banarshidas.

Sharma , R. K. (2002). *Vaishavdharmi Murtikala men Prateek Parampra : Aek Anusheelan.* Jabalpur: Vaidik Vishvvidhylaya.

Shashtri , G. (2007, March). Gao Path. *Gurukul Sodh Bharti, 7*, 79-82.

Shree Mali , R. (2006). *Shareer Sarvaanglakshana.* New Delhi: Daimond Books.

Shree Vishnu Sahastranaamstrotam . (n.d.). Gorakhpur : Geeta Press .

Swarswati , D. (1873). *Shatpath Brahaman.* New Delhi : Dayanand Sansthan .

Swarswati , S. (1873). *Sathpath Brahaman.* New Delhi : Dayanand Sasthan .

Taitiyopanishad, Shankar Bhashya . (1993). Gorakhpur : Geeta Press .

Tripathi , A. (2003). *Shank Samhita.* Jaipur: Jaipur Book House .

Upadhyay , K. (2016). *Amarkosh.* Varanasi : Bhartiya Vidwat Parishad .

Upadhyay, K. (2016). *Dhwaj Ka Itihash.* Varanashi: Bhartiya Vidwat Parishd.

Vedalangkaar, B. D. (1964). *Vishnu Devta.* Haridwar: Gurukul Kaghdi Vishvvidhyalay.

Verma , P. (1964). *Prateekshashtra.* Lacknow: Hindi Samiti Suchana Vibhag.